4. आई एम कलाम के बहाने PART -1

(गाँव के स्कूल में मेरा एक साथी था - मोरपाल। -------------------- रोज़ पंद्रह किलोमीटर बिना छलकाए लिए आता था।)

1. मुहावरे का मतलब क्या है ?

1. बाँछें खिल जाना – प्रसन्न होना/ खुशी से खिल जाना 2. अदला–बदली करना - लेन–देन करना/ विनिमय करना

3. लुक लुक के देखना – छिपकर देखना

2. प्रश्नों का उत्तर लिखें ।

1. माटसाब पूछने पर मोरपाल लुक का मतलब और सही हिज्जा अच्छी तरह से बता देता है। - यहाँ मोरपाल की कौन-सी विशेषता प्रकट है ?
   क्लास में उसकी सतर्कता तथा पढाई के प्रति उसकी रुचि
2. क्लास की दरीपट्टी पर लेखक और मोरपाल की जगहें साथ थीं। क्यों ?
   नाम का पहला अक्षर मिलने की वजह से
3. खेलघंटी में मिहिर और मोरपाल के बीच का सौदा क्या था ?
   खेल घंटी में खाने की अदला-बदली करने का
4. दोनों खाने की अदला-बदली कैसे करता था ?
   मिहिर लाया राजमा-चावल मोरपाल खाता था तो मोरपाल लाया छाछ मिहिर खाता था।
5. दोनों अदला-बदली करके खाना क्यों खाते थे ?
   दोनों एक दूसरे का खाना पसंद करते थे। इतना ही नहीं वे दोनों दिली दोस्त भी थे।
6. ‘ हमारा सौदा था घंटी में खाने की अदला-बदली का ।‘- इस तरह की अदला बदली से हम क्या समझ पाते हैं ?
   सच्ची दोस्ती का मिसाल यहाँ हम देख सकते हैं। दोनों के बीच आपस में ऊँच-नीच या अमीर-गरीब का कोई भेद भाव नहीं था। इसलिए मोरपाल को पसंद राजमा-चावल लेखक लाकर देता था और लेखक को पसंद छाछ मोरपाल भी लाकर देता था।
7. मिहिर के खाने के डिब्बे में राजमा-चावल देखते ही मोरपाल की बाँछें खिल जाती थीं। क्यों ?
   राजमा-चावल अमीरों का खाना है, मोरपाल तो गरीब परिवार का लडका है।
8. खाने के डिब्बे में राजमा देखकर मोरपाल की बाँछें खिल जाती थीं। इससे आप क्या समझते हैं ?
   अपनी गरीबी के कारण घर में राजमा खरीद नहीं सकता था। इसलिए उसे राजमा देखने या खाने का अवसर नहीं मिला था। इसलिए राजमा मोरपाल केलिए खास चीज़ थीं।
9. मोरपाल केलिए खास चीज़ थी राजमा। क्यों ?
   अपनी गरीबी के कारण घर में राजमा खरीद नहीं सकता था। इसलिए उसे राजमा देखने या खाने का अवसर नहीं मिला था
10. मोरपाल ने पहले कभी राजमा देखा भी नहीं था। कारण क्या होगा ?
    मोरपाल की गरीबी
11. मोरपाल कैसे छाछ लाता था ?
    गाँव से पंद्रह किलोमीटर साइकिल चलाकर बिना ज़रा भी छलकाए लाता था।

12. लघु लेख – मित्रता / दोस्ती

दोस्ती जीवन की सबसे कीमती उपहारों में से एक है। जिसकी ज़िंदगी में सच्चे दोस्त हैं, वह भाग्यशाली है। यह रिश्ता मनुष्य खुद बनता है। सच्चा मित्र मुश्किल हालतों में भी हमारे साथ खडा होता है। यह तो अनमोल धन के समान होता है। इसकी तुलना हम दुनिया की किसी और चीज़ से नहीं कर सकते। सच्ची मित्रता से एक साधारण मानव भी श्रेष्ठ और पूजनीय अनुभव है। अमीर-गरीब, छोटा-बडा आदि बातों में मित्रता का कोई स्थान नहीं है।

13. टिप्पणी – मोरपाल और मिहिर की दोस्ती

बचपन में मोरपाल और मिहिर अच्छे दोस्त थे। गाँव के स्कूल में दोनों एक साथ पढते थे। क्लास की दरीपट्टी पर नाम का पहला अक्षर मिलने से दोनों की बैठने की जगहें साथ थीं। खेल घंटी में दोनों खाना अदला-बदली करके खाते थे। मोरपाल अपने घर से छाछ लाकर मिहिर को देता था और मिहिर अपने घर से राजमा-चावल लाकर मोरपाल को देता था। दोनों आपस में बहुत प्यार करते थे। पढाई में वे एक दूसरे की सहायता भी करते थे। दोनों अपनी दोस्ती को बनाये रखने की कोशिश भी करता था। उनकी दोस्ती के बीच अमीरी-गरीबी की कोई भेदभाव नहीं था।

14. मिहिर और मोरपाल के जीवन अनुभवों के आधार पर टिप्पणी

मिहिर संपन्न परिवार में जन्मा था। उनको रोज़ स्कूल जाना पसंद नहीं था। उनके पास बडे शहरों के बडे बाज़ारों से खरीदे बेहतर कपडे होने से उनकेलिए स्कूल यूनीफॉर्म एक बोझ थी। स्कूल में बिताए समय को वह अपने बचपन का सबसे खराब समय समझा करता था। लेकिन उनका साथी मोरपाल दरिद्र परिवार का था। वह रोज़ पंद्रह किलोमीटर साइकिल चलाकर स्कूल आता था। घर की कडी मेहनत और खेत मजूरी के बाद स्कूल का एकमात्र समय वह बच्चा बना रह सकता था। उसके पास एकमात्र कमीज़ -पैंट का नया जोडा उसकी स्कूल यूनीफॉर्म ही थी। स्कूल में बिताए समय उसकेलिए बचपन का सबसे अच्छा समय था। रविवार की छुट्टी उनकेलिए हफ्ते का सबसे बुरा दिन था।

15. टिप्पणी – अपनी स्कूली जीवन की याद करके

सब छात्रों की तरह मुझे भी बचपन में एक अच्छा मित्र था । उसका नाम था मुहम्मद । हम दोनों क्लास में पास-पास बैठते थे । हम दोनों अच्छी तरह पढते थे । कभी-कभी वह मेरा घर आता था तो कभी मैं उसका । शाम को हम पास के खेत में खेलते थे । स्कूल के खाने के समय हम खाने की अदला-बदली भी करते थे । वह घर से बिरियानी लाता था, वह मुझे देता था । मैं घर से लाता भात वह भी खाता था । ईद के दिन मैं उसका घर जाता था तो ओणम के दिन वह मेरा घर भी आता था । ऐसे अवसर पर हम साथ खाते थे । पढाई में हम एक दूसरे की मदद भी करते थे । हम दोनों पढ-लिखकर एक अच्छी नौकरी प्राप्त करना चाहते थे । वह अच्छी तरह चित्र खींचता था । मुझे तो गाना बहुत पसंद था । उसका जैसा मित्र मिलना मेरा सौभाग्य है । मैं उसकी दोस्ती कभी छूटना नहीं चाहती ।

16. पोस्टर (संदेश) – गरीबी विषय पर

देश की उन्नति केलिए
गरीबी
दूर करनी चाहिए ।
राष्ट्र निर्माण केलिए गरीबी हटाएँ ।
गरीबी देश के सर्वनाश का कारणबनता है ।
एक-एक नागरिक का कर्तव्य है गरीबी हटाना ।
गरीबी हटाने केलिए सक्रिय भागीदारी करें ।
गृह संत्रालय, नई दिल्ली

17. टिप्पणी – गरीबी

गरीबी संसार के सबसे विकट समस्याओं में से एक है । गरीबी किसी भी व्यक्ति या इंसान केलिए अत्यधिक निर्धन होने की स्थिति है । इसके कारण लोग जीवन के आधारभूत ज़रूरतों जैसे रोज़ी रोटी, स्वच्छ जल, साफ कपडे, घर, उचित शिक्षा, दवाइयाँ आदि को भी नहीं प्राप्त कर पाते हैं । देश में ज़्यादातर लोग ठीक ढंग से दो वक्त की रोटी नहीं हासिल कर सकते हैं, वो सडक के किनारे सोते हैं और गंदे कपडे पहनते हैं । गरीबी का मुख्य कारण बढती जनसंख्या, कमज़ोर कृषि, भ्रष्टाचार, पुरानी प्रथाएँ, बेरोज़गारी, अशिक्षा, संक्रामक रोग आदि हैं । गरीबी की वजह से ही कोई छोटा बच्चा अपने परिवार की आर्थिक मदद केलिए स्कूल जाने के बजाय कम मजदूरी पर काम करने केलिए मजबूर हो जाते हैं । गरीबी समाज व देश की विकास केलिए खतरा उत्पन्न करती है । इसलिए गरीबी को जड से उखाडने केलिए हरेक व्यक्ति का एक-जुट होना बहुत आवश्यक है ।

18. पटकथा (खाने की अदला बदली के बारे में)

स्थान - स्कूल के कमरे में ।
समय - दोपहर के 1 बजे ।
पात्र - 1. मिहिर, 11 साल का लडका, नीली-खाकी यूनीफॉर्म पहना है ।
2. मोरपाल, 11 साल का लडका, नीली-खाकी यूनीफॉर्म पहना है ।
घटना का विवरण - खेल घंटी के समय दोनों खाना खाने लगते हैं। दोनों आपस में बातें करते हैं ।

संवाद -

मोरपाल - अरे मिहिर, जल्दी आओ हम साथ खाएँ ।
लेखक - पुस्तक बैक में रखकर मैं अभी आया ।
मोरपाल - वाह ! तुम्हारे टिफिन बॉक्स में यह क्या है ?
लेखक - यह तो राजमा है । क्या तुमने इसे अभी तक खाया नहीं ?
मोरपाल - नहीं यार । मैं इसे आज पहली बार देख रहा हूँ ।
लेखक - मेरेलिए सामान्य सी चीज़ तुम्हारेलिए इतना खास ! खाकर कहिए कैसा है राजमा-चावल ? तुमने आज क्या लाया ?
मोरपाल - मैं तो छाछ लाया हूँ ।
लेखक - वाह छाछ ! इसे खाए कितने दिन हुए ?
मोरपाल - तुम्हारे चावल और राजमा की कडी बहुत स्वादिष्ठ है ।
लेखक - तुम्हारे सब्जी-चावल और छाछ भी बहुत बढिया है ।
मोरपाल - सच ! तो हम एक काम करें, आज से हर दिन खाना अदला-बदली करके खाएँ ।
लेखक - ज़रूर । आज से मेरे घर से लाते राजमा-चावल तुम खाओगे और तुम्हारे घर से लाते छाछ-चावल मैं ।
मोरपाल - सचमुच यह तो बडी खुशी की बात है । खेलने जाना है न ? जल्दी खाएँ ।
लेखक - ठीक है ।
(दोनों खाने की अदला-बदली करके खाते हैं ।)

SREEJITH P, KOVOOR VARKALA, SCRIPS

19. वार्तालाप को आगे बढाएँ (खाने की अदला बदली के बारे में)

मोरपाल - घंटी बज गई । जल्दी आओ हम साथ खाएँ ।

मिहिर - ठीक है । मैं अभी आया ।

मोरपाल - कहाँ है मेरा राजमा-चावल ?

मिहिर - यह लो राजमा-चावल, मुझे छाछ दो ।

मोरपाल - यह बडा स्वादिष्ठ है यार । छाछ कैसा है ?

मिहिर - बहुत अच्छा है । मोरपाल तुम यह डब्बा इतने दूर से बिना झलकाए कैसे लाते हो ?

मोरपाल - महीनों से आ रहा हूँ न यार । अब्यास हो गया ।

मिहिर - जो भी हो, बडे आश्चर्य की बात है । मैं ऐसा नहीं कर पाऊँगा ।

20. वार्तालाप – मिहिर और मोरपाल के बीच (मोरपाल गाँव से साइकिल चलाकर स्कूल आने पर)

मिहिर - अरे मोरपाल, तुम आ गए ?

मोरपाल - हाँ । आज मैं बहुत थक गया ।

मिहिर - वह कैसे ?

मोरपाल - इस गर्मी में पंद्रह किलोमीटर साइकिल चलाकर आया है न ?

मिहिर - ओ ... मैं भूल गया ।

मोरपाल - कहाँ है मेरा राजमा-चावल ?

मिहिर - वह मेरे बैक में है । और मेरा छाछ ?

मोरपाल - वह तो साइकिल के पीछे रखा है ।

मिहिर - यार तुम यह डिब्बा इतने दूर बिना छलकाए कैसे लाते हो ?

मोरपाल - महीनों से आ रहा हूँ न यार । अभ्यास हो गया ।

मिहिर - जो भी हो, बडे आश्चर्य की बात है । मैं ऐसा नहीं कर पाऊँगा । जल्दी चलो, स्कूल की घंटी लग गई है ।

मोरपाल - ठीक है । साइकिल रखकर मैं अभी आया ।

21. मोरपाल का पत्र (पहली बार राजमा खाए दिवस)

स्थान : ....

तारीख : ....

प्रिय मित्र,

तुम कैसे हो ? कुशल हो न ? मैं यहाँ ठीक हूँ । तुम्हारी कोई खबर नहीं कुछ दिनों से,एक खास बात बताने केलिए मैं यह पत्र भेज रहा हूँ ।

मेरा दोस्त मिहिर रोज़ राजमा लाता है । उसके खाने के डिब्बे में राजमा देखकर मैं खुशी से खिल जाता हूँ । उसके टिफिन बॉक्स से मैंने पहली बार राजमा खाया । कितना स्वादिष्ट है । मेरी छाछ उसको बहुत पसंद है । उसके घर में रोज़ राजमा पकाता है । उसकेलिए वह सामान्य चीज़ है । वह बहुत निष्कलंग है । लेकिन स्कूल जाना उसे पसंद नहीं है । छुट्टी के दिन पर वह घर में नाचा करता । जो भी हो,अब मुझे यहाँ भी एक मनपसंद मित्र को मिला । मिहिर जैसे एक मित्र को मिलने पर मैं बहुत भाग्यशाली हूँ ।

वहाँ तुम्हारी पढाई कैसे चल रही है ? तुम कब यहाँ आओगे ? तुम्हारे माँ बाप से मेरा प्रणाम कहना । जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

तुम्हारा मित्र
(हस्ताक्षर)
नाम

सेवा में,
नाम
पता ।

22. मोरपाल की डायरी (पहली बार राजमा खाए दिवस)

तारीख : ....

आज मेरेलिए एक विशेष दिन था । पहली बार मैंने राजमा खाया । कितना स्वादिष्ठ था। खाने केलिए बैठने पर मेरे दोस्त मिहिर के टिफिन बॉक्स में रखे राजमा देखते ही मेरी बाँछें खिल गयी थीं । उसे खाने से पहले मैंने कभी राजमा देखा भी नहीं था । राजमा जैसी चीज़ मेरेलिए तो अपूर्व ही था , पर उसकेलिए वह एक साधारण चीज़ था । मैं और उसके बीच खेल घंटी में खाने की अदला बदली करने का निश्चय किया । उसके घर से लाया राजमा-चावल मैंने खाया और मेरे घर से लाया छाछ-चावल उसने भी । जैसे मैंने राजमा खाया, वैसे उसने छाछ को भी बहुत चाव से खा लिया । ऐसा लगा कि छाछ उसकी कमज़ोरी है । आज से हर दिन मैं अपने घर से छाछ लाकर उसे दूँगा ।

SREEJITH R, KOVOOR VARKALA, SCRIYS

23. मिहिर की डायरी (मोरपाल केलिए राजमा सामान्य-सी चीज़ था)

तारीख : ....

आज मेरेलिए एक विशेष दिन था । आज मैं मित्र मोरपाल के साथ खाने केलिए बैठा । मेरे खाने के डिब्बे में राजमा देखकर वह बहुत खुश हुआ था । वह पहली बार राजमा देख रहा था । उसकी गरीबी के कारण घर में राजमा खरीद नहीं सकता था । मेरेलिए तो यह सामान्य-सी चीज़ था । पर उसकेलिए वह खास चीज़ थी । उसने खाने केलिए छाछ लाया था । छाछ मेरी कमज़ोरी थी । हमने आज से खाना अदला-बदली करके खाने का निश्चय किया । मैं उसकेलिए राजमा लाऊँगा, वह मेरेलिए छाछ । हम दोनों बडी चाव से खाना खाते रहे ।

24. मिहिर का पत्र (मोरपाल के साथ अपनी खाने की अदला बदली)

स्थान: ....
तारीख: ....

प्रिय मित्र,

तुम कैसे हो ? कुशल हो न ? मैं यहाँ ठीक हूँ । तुम्हारी कोई खबर नहीं कुछ दिनों से , एक खास बात बताने केलिए मैं यह पत्र भेज रहा हूँ ।

तुमको मेरा दोस्त मोरपाल को याद है न ? आज हम खाने केलिए बैठा तो मेरे टिफिन बॉक्स में रखे राजमा देखकर वह बहुत प्रसन्न हो गया । वह राजमा को पहली बार देख रहा था । मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि मेरेलिए सामान्य सी चीज दूसरों केलिए इतनी खास हो सकती है । आज से हमारा सौदा हुआ, खाने की अदला-बदली करने का । उसके घर से लाया छाछ का डिब्बा मुझे दिया और मेरे घर से लाया राजमा -चावल उसको । मुझे लगता है कि अपने घर की गरीब हालत से ही वह राजमा जैसा बढिया दाल खरीद न सकता होगा । मैं हर दिन उसे अपने घर से राजमा लाकर देना चाहता हूँ ।

वहाँ तुम्हारी पढाई कैसे चल रही है? तुम कब यहाँ आओगे? तुम्हारे माँ-बाप से मेरा प्रणाम कहना। जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

सेवा में,
नाम
पता ।

तुम्हारा मित्र
(हस्ताक्षर)
नाम

4. आई एम कलाम के बहाने PART - 2

(मैं स्कूल जाने में रोया करता । ------------------ वह से ही शादी में पहनकर आता ।)

1. मुहावरे का मतलब क्या है ?

1. कमरतोड मेहनत करना – अत्यधिक परिश्रम करना
2. हैरान रह जाना – आश्चर्य हो जाना
3. जान पाना – समझ सकना
4. चिढाना – क्रुद्ध बनाना

भाग – एक (स्कूली जीवन)

1. मिहिर को किस अवसर पर अपना बचपन बहुत याद आया ?
   आई एम कलाम फिल्म देखने पर
2. कई दिनों के बाद मिहिर ने एक वास्तविकता समझ ली । वह क्या थी ?
   स्कूल में बिताए समय को वह अपने बचपन का सबसे खराब समय समझता था ।
3. मिहिर कब खुशी से नाचता था ?
   स्कूल की छुट्टी हो जाने से
4. मिहिर ने स्कूल में बिताए समय को अपने बचपन का सबसे खराब समय समझा । क्यों ?
   क्योंकि मिहिर को स्कूल जाना पसंद नहीं था ।
5. स्कूल जाने के संबंध में मिहिर के मनोभाव पर आपका विचार क्या है ?
   मिहिर को स्कूल आना पसंद नहीं है । वह छुट्टी के दिन खुशी से बिताना चाहता है । स्कूल जाने की उसकी अरुचि यहाँ हम देख सकते हैं ।
6. मोरपाल केलिए रविवार की छुट्टी का दिन हफ्ते का सबसे बुरा दिन क्यों होता ?
   रविवार को घर पर कमरतोड मेहनत करना पडता है।
7. मोरपाल बिना नागा क्यों स्कूल चला आता था ?
   मोरपाल गरीब था । ऐसे बच्चों को छुट्टी के दिन अपने परिवार में कमरतोड मेहनत और खेत मजूरी करने पडते थे । स्कूल आते समय ही उन्हें थोडा सा आराम मिलता था ।
8. ' रविवार की छुट्टी का दिन उनकेलिए हफ्ते का सबसे बुरा दिन हुआ करता ।'- ऐसा क्यों कहा गया है ?
   स्कूल से गहरा प्रेम होने से मोरपाल ओर उसके जैसे सहपाठी बिना नागा रोज स्कूल आना चाहता था। स्कूल उनको जीवन में सफलता पाने की जोश पैदा करता था । रविवार को स्कूल न होने से वे निराश हैं और उसे हफ्ते का सबसे बुरा दिन मानते हैं।

SREEJITH R KOVOOR VARKALA SCRIPS

9. स्कूल जाने में मिहिर और मोरपाल में क्या फर्क होता है ?

मोरपाल रोज़ स्कूल जाना चाहता तो मिहिर को स्कूल जाना कतई पसंद नहीं था ।

10. यहाँ मोरपाल और मिहिर के स्कूल जीवन में क्या-क्या अंतर हैं ?

मोरपाल स्कूल आना पसंद करता है । उसको स्कूल में बिताए समय पर ही जीवन के कष्टों को भूलने का अवसर मिलता है । लेकिन मिहिर को स्कूल आना पसंद नहीं है । वह छुट्टी के दिन खुशी से बिताना चाहता है ।

11. मोरपाल के लिए जीवन का सबसे अच्छा समय स्कूल में बिताए समय था। क्यों ?

स्कूल जाते समय ही मोरपाल घर के काम से बचकर एक बच्चा बना रह सकता था और अपने मित्रों के साथ खुशी से रह पाता । स्कूल उसको अच्छी शिक्षा पाकर बडे आदमी बनने की जोश पैदा करता था। इसलिए वह अपनेगाँव से पंद्रह साइकिल चलाकर बिना नागा रोज़ स्कूल जाना चाहता था ।

12. बचपन का दोस्त मोरपाल के बारे में मिहिर की यादें क्या–क्या हैं ?

मोरपाल मिहिर का अच्छा मित्र था । वह एक गरीब परिवार का था। वह रोज़ 15 किलोमीटर साइकिल चलाकर स्कूल आता था । वह अपने घर से छाछ लाता था और वह मिहिर को देकर मिहिर का राजमा–चावल खाता था । मोरपाल रोज़ यूनीफॉर्म पहनना और स्कूल जाना पसंद करता था ।

13. लेख – गरीब बच्चों की हालत

हर बच्चा खेलना-खाना बहुत पसंद करता है । पर बहुत से बच्चे गरीब परिवार में जन्म लेने के कारण अपने बचपन से वंचित हैं । उनको स्कूल जाने के बजाय काम पर जाना पडता है । स्कूल जाने का मौका मिलते बच्चे भी पढाई में ध्यान नहीं दे सकते । उन्हें माँ-बाप के साथ खेत-मजूरी करने जाना पडता है । कभी समय पर खाना भी नहीं मिलता। मोरपाल जैसे कई बच्चे हैं जो स्कूल को बहुत पसंद करते हैं, पढाई में आगे हैं । पर भी बीच में पढाई छोडकर पूरा समय काम में लग जाना पडता है । गरीब बच्चे ऐसे कई तरह की परेशानियों में जीने को मजबूर होते हैं ।

14. टिप्पणी - मोरपाल की चरित्रगत विशेषताएँ

मिहिर की आई एम कलाम के बहाने फिल्मी लेख का पात्र है मोरपाल । वह गाँव के स्कूल में मिहिर का साथी था । वह लेखक के पास ही बैठता था । खेल घंटी में खाने की अदला-बदली करता था । लेखक के टिफिन बॉक्स में रखे राजमा को देखकर वह खुशी से खिल जाता था । अपनी गरीबी के कारण वह उसे पहली बार देखा था । घर की कमरतोड मेहनत और खेत-मजूरी से बचने केलिए वह रोज़ स्कूल आता था । स्कूल के 15 किलोमीटर दूर के किसी गाँव से साइकिल चलाकर आता था ।   स्कूल उसको अच्छी शिक्षा पाकर बडे आदमी बनने की जोश पैदा करता था । वह लेखक केलिए छाछ लाकर देता था । उसके पास एकमात्र कमीज़-पैंट का नया जोडा वह नीली-खाकी स्कूल यूनीफॉर्म ही थी,इसलिए इसे पहनकर वह सब कहीं जाता था । वह आठवीं तक ही पढाई कर सकता है ।

15. मिहिर की चरित्रगत विशेषताओं पर टिप्पणी

आई एम कलाम के बहाने फिल्म का के रचयिता मिहिर पांडेय संपन्न परिवार में जन्मा था । गाँव के स्कूल में बचपन की पढाई की थी । वहाँ उनका साथी था मोरपाल । नाम का पहला अक्षर मिलने से वह मोरपाल के पास बैठता था । खेल घंटी में वह मोरपाल के साथ खाने की अदला-बदली करता था । लेखक केलिए सामान्य चीज़ राजमा मोरपाल को देकर उसके घर से लाता छाछ वह खाता था । छाछ उसकी कमज़ोरी थी । स्कूल में बिताए समय को वह अपने बचपन का सबसे खराब समय समझा करता था । वह स्कूल जाने में हमेशा रोया करता था । रोज़ नए बहाने बनाया करता और जब तेज़ बारिश के दिनों में स्कूल के रास्ते में पानी भर जाने से छुट्टी हो जाया करती, तो वह घर पर नाचा करता । उसकेलिए स्कूल की नीली-खाकी यूनीफॉर्म बोझ थी । उसके पास उससे बेहतर कपडे थे जिन्हें उसने अपनी पसंद से बडे शहरों के बडे बाज़ारों से खरीदा था । वह स्कूल की यूनीफॉर्म से हमेशा चिढा करता और उसे पहनना हमेशा टाला करता । इससे अमीर होने पर भी दोस्ती को पसंद करनेवाला और स्कूल जाना, यूनीफॉर्म पहनना आदि न पसंद करनेवाले बच्चे को यहाँ हम उसमें देख सकते हैं ।

16. मोरपाल की डायरी (कल रविवार है, स्कूल की छुट्टी है)

तारीख : ………………

आज मेरेलिए कैसा दिन था, बता नहीं सकता । कल रविवार स्कूल की छुट्टी … । हे भगवान पूरे दिन घर में कमरतोड मेहनत करना पडेगा । याद करते ही मन दुख से भर जाता है । स्कूल है तो यूनीफॉर्म पहनकर खेत मजूरी से बच पाता । पर … दुख की बात है कल राजमा भी खा न सकता । मित्रों के साथ खुशी से कल बिता नहीं पाएगा । मुझे तो पढना ही बहुत पसंद है । लेकिन घरवालों को मुझसे काम करवाना अच्छा लगता है । काश रविवार को छुट्टी न होते तो कितनी अच्छी बात होती   ! आज बस इतना ही … बहुत नींद आ रही है । मैं सोने जा रहा हूँ ।

SREEJITH R. KOVOOR VARKALA. SCRHS

17. मिहिर का पत्र (मोरपाल रोज़ स्कूल आता है)

स्थान : ....
तारीख : ....

प्रिय मित्र,

तुम कैसे हो ? कुशल हो न ? मैं यहाँ ठीक हूँ । तुम्हारी कोई खबर नहीं कुछ दिनों से, एक खास बात बताने केलिए यह पत्र भेज रहा हूँ ।

तुम्हें देखने की इच्छा से मैं तुम्हारे गाँव में आया था, पर देख न सका । तुम्हारे जैसा एक दोस्त है मुझे । हम कक्षा में पास-पास बैठते हैं । उसका नाम मोरपाल है । वह हर दिन घर से पंद्रह किलोमीटर साइकिल चलाकर स्कूल आता था । स्कूल के प्रति उसका प्रेम गहरा है । मैं छुट्टी मिलने पर नाचता हूँ और खुशियाँ मनाता हूँ । लेकिन वह छुट्टी पर रोता है । वह हर दिन स्कूल आता है । पढने की उसकी इच्छा देखकर मुझे बडी खुशी आती है । वह भी तुम जैसे प्यारा है । एक दिन मैं उसे लेकर तुम्हारे घर आऊँगा ।

वहाँ तुम्हारी नौकरी कैसे हो रही है ? तुम कब यहाँ आओगी ? परिवारवालों से मेरा प्रणाम कहना । जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

तुम्हारा मित्र
(हस्ताक्षर)
नाम

सेवा में,
नाम
पता ।

18. वार्तालाप को आगे बढाएँ (मिहिर को स्कूल की छुट्टी पसंद है)

मोरपाल – यार, तुम कल कहाँ गए थे ?

मिहिर - बारिश में कोई स्कूल आएगा क्या ?

मोरपाल – तुम्हें स्कूल की छुट्टी उतना पसंद है ?

मिहिर - हाँ यार, मुझे तो स्कूल आना ही पसंद नहीं । इसलिए ऐसी किसी छुट्टी की इंतज़ार हमेशा करता रहता हूँ ।

मोरपाल – पर मुझे तो स्कूल की छुट्टी बुरी लगती है ।

मिहिर - पूछना भूल गया, तुम रोज़ नागा स्कूल क्यों आते हो ?

मोरपाल – स्कूल आते समय ही मैं घर के कमरतोड मेहनत से बचकर एक बच्चा बन जाता है ।

मिहिर - आज तुम छाछ नहीं लाया ?

मोरपाल – हाँ लाया । तुम राजमा भी लाया है न ?

मिहिर - नहीं भूला । अब हम क्लास में जाएँ । घंटी बजा होगा । क्लास टीचर को छुट्टी पत्र भी देना है ।

मोरपाल – ठीक है । जल्दी चलो ।

19. पटकथा (रोज़ मोरपाल स्कूल आने के बारे में मिहिर उससे पूछने पर)

मिहिर – अरे मोरपाल, मैं तुमसे एक बात पूछूँ ?

मोरपाल - पूछो यार, क्या बात है ?

मिहिर – क्या तुम्हें स्कूल आना बहुत पसंद है ?

मोरपाल - हाँ, क्या है ?

मिहिर – तुम एक दिन दिन भी छुट्टी क्यों न लेते ?

मोरपाल - स्कूल आने से मैं घर की खेत मजूरी से बच जाती और अपने मित्रों से मिल सकूँगा और खेल सकूँगा ।

मिहिर – ठीक है यार । मुझे तो स्कूल आना ही पसंद नहीं ।

मोरपाल – क्या छुट्टी पसंद है ?

मिहिर – हाँ, लेकिन मुझे तो हमारी दोस्ती बहुत पसंद है ।

मोरपाल – मुझे भी ऐसा ही है यार । काश हमारी दोस्ती कभी न छूट जाती !

मिहिर - फिकर मत करो यार, हमारी दोस्ती इसी तरह बनी रहेगी । अब मैं जाता हूँ, कल मिलेंगे ।

मोरपाल – ठीक है, बाई ।

भाग – दो (स्कूल यूनीफार्म से जुडा कार्य)

1. मोरपाल सदा स्कूल की यूनीफॉर्म पहनता था । क्यों ?
क्योंकि मोरपाल के पास एकमात्र कमीज़ पैंट का नया जोडा वह नीली खाकी स्कूल यूनिफॉर्म ही थी ।
2. बचपन में लेखक को यूनीफॉर्म पहनना क्यों पसंद नहीं था ?
क्योंकि लेखक के पास अपनी पसंद से बडे शहरों के बडे बाज़ारों से खरीदे बेहतर कपडे थे ।
3. मोरपाल शादी में भी स्कूली यूनीफॉर्म पहनकर क्यों आता था ?
क्योंकि मोरपाल के पास एकमात्र कमीज़ पैंट का नया जोडा वह नीली खाकी स्कूल यूनिफॉर्म ही थी ।
4. मिहिर क्या देखकर हैरान रह गया ?
शादी में भी मोरपाल को स्कूली यूनीफॉर्म पहने देखकर
5. मैं स्कूल की नीली-खाकी यूनीफॉर्म से हमेशा चिढा करता । - इससे आपने क्या समझा ?
लेखक के पास अपनी पसंद से बडे शहरों के बडे बाज़ारों से खरीदे बेहतर कपडे थे । इसलिए स्कूल की नीली-खाकी यूनीफॉर्म से सदा चिढा करता था और उसे पहनना पसंद नहीं करता था ।
6. लेखक केलिए यूनीफॉर्म बोझ थी तो मोरपाल केलिए सबसे प्यारा । इससे आपने क्या समझा ?
लेखक के पास अपनी पसंद से बडे शहरों के बडे बाज़ारों से खरीदे बेहतर कपडे थे । इसलिए स्कूल की नीली-खाकी यूनीफॉर्म से सदा चिढा करता था और उसे पहनना पसंद नहीं करता था । मोरपाल के पास एकमात्र कमीज़ पैंट का नया जोडा वह नीली खाकी स्कूल यूनिफॉर्म ही थी । इसलिए मोरपाल सदा स्कूल की यूनीफॉर्म पहनता था ।

7. मिहिर का पत्र (शादी में भी मोरपाल यूनीफॉर्म पहनकर आया देखकर)

स्थान : ....

तारीख : ....

प्रिय मित्र,

तुम कैसे हो? कुशल हो न? मैं यहाँ ठीक हूँ । तुम्हारी कोई खबर नहीं कुछ दिनों से, एक खास बात बताने केलिए यह पत्र भेज रहा हूँ ।

मैंने अपने मित्र मोरपाल के बारे में पहले तुमसे बताया था न ? उसे मैंने हमेशा स्कूल यूनिफॉर्म पहने ही देखा था । लेकिन मोहल्ले की किसी शादी में उसे वही स्कूल यूनिफॉर्म पहने हुए देखा तो सचमुच मैं हैरान रह गया । कोई शादी में ऐसा आता है क्या? हम तो शादी में बेहतर कपडे ही पहनते हैं न ? सोचा कि उससे इसके बारे में पूछ ले । बाद में ही मुझे पता चला कि उसके पास एकमात्र कमीज पैंट का नया जोडा वह नीली -खाकी स्कूल यूनिफॉर्म ही थी । इसलिए वह हमेशा यही पहनकर घूमता था। कितनी बुरी हालत है उसकी । अगले दिन ही मैं अपने पास के कुछ नए कपडे उसको दूँगा ।

वहाँ तुम्हारी पढाई कैसे चल रही है? तुम कब यहाँ आओगे? तुम्हारे परिवारवालों से मेरा प्रणाम कहना । जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

सेवा में,
नाम
पता ।

तुम्हारा मित्र
(हस्ताक्षर)
नाम

भाग – तीन (मोरपाल की पढाई छूटना)

1. मोरपाल की आर्थिक दशा के संबंध में आप क्या जानते हैं ?
मोरपाल दरिद्र परिवार का था । उसे ठीक से भोजन या वस्त्र नहीं मिलता था । उसके पास एकमात्र कमीज़-पैट का नया जोडा उसकी स्कूल यूनीफॉर्म ही थी ।
2. मोरपाल की इस हालत पर आपका विचार क्या है ?
मोरपाल दरिद्र परिवार का था । उसे स्कूल जाने के बजाय काम पर जाना पडता है । वह कई तरह की परेशानियों में जीने को मजबूर होता है ।
3. मोरपाल पढाई छोडकर आज क्या करता है ?
घर की कमरतोड मेहनत और खेत-मजूरी
4. मोरपाल की पढाई आठवीं के बाद छूट जाता है । इसका कारण क्या है ?
गरीबी के कारण खेती में पिता की सहायता करने केलिए
5. मोरपाल की पढाई क्यों बंद हो जाती है ?
घर की गरीबी के कारण आठवीं के बाद उसका स्कूल छूट जाता है ।

6. मिहिर का पत्र (मोरपाल का स्कूल आठवीं के बाद छूट जाने के बारे में)

स्थान : ....

तारीख : ....

प्रिय मित्र,

तुम कैसे हो ? कुशल हो न ? मैं यहाँ कुशलता से हूँ । परीक्षा की तैयारी में होंगे ? एक खुशी की बात बताने केलिए यह पत्र लिखता हूँ ।

मेरी कक्षा में एक मित्र है, उसका नाम मोरपाल है । सारे दिन मोरपाल मेरेलिए छाछ लाता है । बदले में मैंने उसको राजमा-चावल देता हूँ । आज मोरपाल ने मुझसे कहा कि वह कल से स्कूल नहीं आएगा । मैं यह सुनकर स्तब्ध रह गया । वह गरीब है तो भी पढने में होशियार है । मुझे तो स्कूल जाना पसंद नहीं है । मोरपाल कल से अपने पिता के साथ खेत-मजूरी करने जाएगा । मैं मोरपाल की दोस्ती के कारण ही स्कूल जाता था । कल से मैं कैसे स्कूल जाऊँ ? किससे दोस्ती करूँ ? मैं बहुत उदास हूँ ।

तुम्हारी माताजी और पिताजी को मेरा प्रणाम । छोटे भाई को मेरा प्यार । तुम्हारी जवाब पत्र की प्रतीक्षा में,

सेवा में, तुम्हारा मित्र
नाम (हस्ताक्षर)
पता । नाम

7. मोरपाल की डायरी (वह कल से स्कूल नहीं जा पाने से दुखी होकर)

तारीख : ....

आज मेरेलिए दुखी दिन था । आज सबेरे पिताजी ने कहा कि कल से स्कूल नहीं जाएँ । मेरा परिवार बहुत गरीब है । इसलिए कल से पिताजी के साथ खेत-मजूरी करने जाना है । अब मैं आठवीं कक्षा में हूँ । मुझे आगे पढने का शौक है । मैं स्कूल जाए बिना मिहिर को कैसे मिलूँगा ? मेरे दोस्तो में सबसे जिगरी दोस्त मिहिर ही है । उससे राजमा-चावल कैसे खाऊँगा ? मेरे जैसे मिहिर भी दुखी होगा । मुझे सिर्फ एक जोडा नीली-खाकी यूनीफॉर्म ही थी । तब भी सारे दिन स्कूल जाना पसंद था । आगे मैं क्या करूँ ?

8. मिहिर की डायरी (मोरपाल का स्कूल आठवीं के बाद छूट जाने के बारे में)

तारीख : ....

आज मेरेलिए दुखी दिन था । आज भी सारे दिनों के जैसे मोरपाल मेरेलिए छाछ लाया । बदले में मैंने उसको राजमा-चावल दिया । मोरपाल ने मुझसे कहा कि वह कल से स्कूल नहीं आएगा । मैं यह सुनकर स्तब्ध रह गया । वह गरीब है तो भी पढने में होशियार है । मुझे तो स्कूल जाना पसंद नहीं है । मोरपाल कल से अपने पिता के साथ खेत-मजूरी करने जाएगा । मैं मोरपाल की दोस्ती के कारण ही स्कूल जाता था । कल से मैं कैसे स्कूल जाऊँ ? किससे दोस्ती करूँ ? मैं बहुत उदास हूँ ।

9. वार्तालाप – मिहिर और मोरपाल के बीच (मोरपाल स्कूल छूट देने की बात)

मिहिर - नमस्ते मोरपाल ।
मोरपाल - नमस्ते ।
मिहिर - तुम क्यों उदासीन हो ? बताओ मुझसे । क्या बात है ?
मोरपाल - तुमसे छिपाने को कुछ नहीं है । कल से मैं स्कूल नहीं आऊँगा ।
मिहिर - क्या ? तुमने क्या बताया ?
मोरपाल - ठीक ही कहा है मिहिर ।
मिहिर - फिर तुम क्या करने जा रहे हो ?
मोरपाल - कल से पिताजी को खेती में सहायता करने जाऊँगा ।
मिहिर - तुमको स्कूल आना बहुत पसंद है न ?
मोरपाल - पसंद है । लेकिन मैं मज़बूर हूँ ।
मिहिर - मुझे स्कूल आना बहुत पसंद नहीं है । कल से तुम भी नहीं हो तो ...
मोरपाल - कोई बात नहीं ... अच्छी तरह पढो । हम फिर मिलेंगे ।
मिहिर - ठीक है मोरपाल ।

10. वार्तालाप – कई सालों बाद मिहिर मोरपाल से मिलता है

मिहिर – अरे मोरपाल... मोरपाल है न ?

मोरपाल – हाँ ... मेरा मित्र मिहिर ।

मिहिर – हाँ ... इधर तू ?

मोरपाल – बाज़ार आया ।

मिहिर – अब भी खेती करता है ।

मोरपाल – हाँ मित्र ... सब्जी बेचने केलिए आया था । और तू यहाँ ?

मिहिर – इधर एक साहित्य सम्मेलन में आया था ।

मोरपाल – वाह ! कितनी अच्छी बात है ! तेरी तस्वीर एक पत्रिका में देखी थी ।

मिहिर – पत्रिका में !

मोरपाल – हाँ, मेरी बेटी ने दिखाया । उससे मैं बोला अपनी दोस्ती के बारे में ।

मिहिर – कितने बच्चे हैं ?

मोरपाल – बस एक और तेरे ?

मिहिर – मेरा एक बेटा ।

मोरपाल – स्कूल जाते समय तेरे जैसा रोता है ?

मिहिर – हाँ, बिलकुल मेरे जैसा । आज भी तेरे छाछ का स्वाद याद करता हूँ ।

मोरपाल – तेरे राजमा चावल अब भी मन भरता है ।

मिहिर – गाँव आते समय ज़रूर तुझसे मिलूँ ।

मोरपाल – मेरी किस्मत ।

11. आई एम कलाम फिल्म देखने के बाद मिहिर ने मोरपाल के नाम लिखा पत्र ।

स्थान : ....

तारीख : ....

प्रिय मित्र,

तुम कैसे हो ? ठीक हो न ? घर में सब कुशल है न?

पिछले हफ्ते मैं ने आई एम कलाम फिल्म देखा । उस फिल्म के प्रमुख पात्र दो बच्चे हैं, छोटू और रणविजय । तब मुझे हमारे बचपन की याद आई । खाने की अदला-बदली, साइकिल चलान आदि का । अब हम कब मिलें ? मेरी आशा है कि तुम पढाई ज़ारी रखें ।

जवाब पत्र की प्रतीक्षा में,

तुम्हारा मित्र
(हस्ताक्षर)
नाम

सेवा में,
नाम
पता ।

SREEJITH R, KOVOOR VARKALA, SCRIPS

4. आई एम कलाम के बहाने PART - 3

(नील माधव पांडा की ‘ आई एम कलाम ’ देखते हुए मुझे ------------------ जिनसे मिलकर हमारे कलाम को कुछ कहना है ।)

1. मुहावरे का मतलब क्या है ?

1. इशारा करना – संकेत करना 2. नकल करना – अनुकरण करना 3. दिल जीत लेना – आकर्षित करना/ प्रशंसा का पात्र बनना

4. वाहवाही करना – प्रशंसा करना 5. दवा करना – चिकित्सा करना 6. वादा करना – वचन देना

भाग – एक (कलाम और रणविजय की दोस्ती)

1. फिल्म का नायक कौन था ?

छोटू उर्फ कलाम

2. रणविजय कौन है ?

ढाणी के राणा सा का बेटा

3. रणविजय को स्कूल जाना कतई पसंद नहीं है । क्यों ?

क्योंकि स्कूल रणविजय को परीक्षा का डर दिखाकर भयभीत करता है ।

4. कलाम और रणविजय के बीच दोस्ती कैसे होती है ?

पहली मुलाकात के समय दोनों के बीच घुडसवारी सीखने और पेड पर चढना सिखाने के लेन देन को लेकर दोस्ती हो जाती है।

5. कलाम और रणविजय के बीच का लेन-देन क्या था ?

कलाम रणविजय को पेड पर चढना सिखाएगा और रणविजय कलाम को घुडसवारी सिखाएगा ।

6. कलाम और रणविजय की ज़िंदगी का क्या अंतर क्या है ?

कलाम गरीब लडका था तो रणविजय संपन्न परिवार का । कलाम केलिए स्कूल जाना सबसे बडा सपना था, पर रणविजय स्कूल जाना कतई पसंद नहीं करता था । कलाम चाय की दुकान में काम करता था । रणविजय तो अंग्रेज़ी स्कूल का छात्र था ।

7. फिल्म के कलाम की कहानी और लेखक के बचपन की कहानी में क्या फर्क है ?

फिल्म में कलाम दिल्ली पहुँचता है और अपनी पसंद के स्कूल जाने का मौका भी मिलता है । मोरपाल का स्कूल आठवीं के बाद छूट जाता है और वह अपने पिता की तरह आज भी वहीं खेत-मजूरी करता है ।

8. ‘ बाकी निन्यानवे कहानियों को कभी भूलना नहीं चाहिए जो हमारे बचपनों में है ।‘- लेखक ने ऐसा क्यों कहा है ?

समाज में बहुत कम लोग ही बचपन में देखते अपना सपना पूर्ण कर पाता है । बाकी अपने पारिवारिक परेशानियों के अनुसार जीने को मजबूर होते हैं । फिल्म में कलाम को अपनी मंजिल मिलती है लेकिन लेखक का मित्र मोरपाल अपना लक्ष्य पाने में सफल नहीं बनता । इसलिए लेखक ऐसा कहते हैं ।

9. समाचार (रपट) – ‘ आई एम कलाम ’ सिनेमा की प्रदर्शनी के संबंध में समाचार पत्रों में आया

‘ आई एम कलाम ’ सिनेमा की प्रदर्शन- सारे जगहों में हाउस फुल !

स्थान : .... आज राष्ट्र के अनेक थिएटरों में ‘ आई एम कलाम ’ नामक फिल्म की प्रदर्शनी हुई । सुबह पाँच बजे से लेकर रात तक छह शो हुए हैं । नील माधव पांडे की यह फिल्म सूपर हिट है, यह खबर सारी जगहों से मिलती है । सभी थिएटरों के आगे लोगों की लंबी कतार दिख पडा । अनेक लोग टिकट न मिलने से निराश होकर लौट रहे थे । उन्होंने निश्चय किया है कि कल बडे सबेरे ही आएँगे और ज़रूर सिनेमा देखेंगे । यह फिल्म कम-से-कम दो सौ दिन यहाँ होगा । एक महीने तक की टिकट अभी बुक किया है ।

10. पटकथा (रणविजय के कमरे में मोरपाल आने पर)

स्थान - राणा सा के घर में, रणविजय के कमरे में ।

समय - शाम के 6 बजे ।

पात्र - 1. रणविजय, 10 साल का लडका, कुर्ता और आधा पतलून पहना है ।

2. कलाम, 10 साल का लडका, कुर्ता और आधा पतलून पहना है ।

घटना का विवरण - रणविजय के कमरे में आने पर कलाम वहाँ बहुत सारे पुस्तक देखते हैं । वह इसके बारे में उससे पूछता है ।

संवाद –

कलाम - इतनी सारी किताबें ! किसकी हैं ?

रणविजय – मेरा ही है ।

कलाम - क्या तुम इसे पढते हो ?

रणविजय – थोडा, मुझे हिंदी की कविता याद नहीं आती । मेरी हिंदी थोडी कमज़ोर है ।

कलाम - ठीक है । मैं तुम्हें हिंदी सिखाऊँगा, क्या तुम मुझे अंग्रेज़ी सिखाओगे ?

रणविजय – ज़रूर सिखाऊँगा । तुम मुझे पेड पर चढना सिखाओगे ?

कलाम - हाँ, तुम मुझे घुडसवारी सिखाओगे ?

रणविजय – हाँ, ज़रूर ।

कलाम - ठीक है । आज से हम अच्छे दोस्त होंगे ।

रणविजय – ठीक है यार ।

(कलाम वहाँ से अपना घर जाता है । रणविजय खिडकी से उसे देखता है ।)

11. कलाम और रणविजय की दोस्ती पर टिप्पणी

आई एम कलाम फिल्म का नायक छोटू उर्फ कलाम का दोस्त था ढाणा के राणा के बेटा रणविजय । कलाम गरीब लडका था तो रणविजय संपन्न परिवार का । दोनों के बीच घुडसवारी सीखना और पेड पर चढना सिखाने के लेन-देन को लेकर दोस्ती हो जाती है । रणविजय कलाम को अंग्रेज़ी सिखाने में मदद करता है तो कलाम रणविजय को हिंदी । रणविजय के मन में अमीर होने का कोई भाव नहीं था । दोनों अपने संकट तथा आशाएँ आपस में बाँटते थे । दोनों एक दूसरे से बहुत प्यार भी करते थे । कलाम की किताब और कपडे जला देने पर रणविजय उसको अपनी किताब और कपडे देता है । कलाम की मदद से रणविजय स्कूल के हिंदी भाषण प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार जीतता है । अपने ऊपर चोरी का आरोप लगाए जाने पर दोस्त को बचाने केलिए कलाम उस आरोप को सह लेता है । कलाम अपनी दोस्ती को ऊँचा स्थान देनेवाला था । अंत में रणविजय की मदद से कलाम उसके साथ अपने पसंद के स्कूल जाकर पढने में सफल बनता है। इस तरह हम उनमें दो अच्छे दोस्त को हम देख सकते हैं।

12. टिप्पणी - रणविजय की चरित्रगत विशेषताएँ

नील माधव पांडा की आई एम कलाम फिल्म का नायक छोटू उर्फ कलाम का साथी था रणविजय । वह ढाणी के राणा का बेटा था । अमीर होने की कोई भाव उसमें नहीं था । परीक्षा का डर दिखाकर भयभीत करने से उसे स्कूल जाना पसंद नहीं था । पेड पर चढना सीखना और घुडसवारी सिखाने का लेन-देन को लेकर कलाम के साथ उसकी दोस्ती होती है । वह हिंदी में थोडा पीछा है । कलाम की सहायता से वह स्कूल के हिंदी भाषण प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार का ट्रॉफी जीत लेता है । कलाम की किताबों को जला दिया जाने पर वह उसे अपनी किताबें देता है । वह कलाम को अंग्रेज़ी सीखने में मदद भी करता है । इस प्रकार हम उसमें अच्छे मित्र को देख पाते हैं ।

13. टिप्पणी - छोटू उर्फ कलाम की चरित्रगत विशेषताएँ

‘ नील माधव पांडा ’ की ‘ आई एम कलाम ’ फिल्म का नायक है छोटू उर्फ कलाम । चाय की दूकान में काम करनेवाले कलाम का सपना था-स्कूल जाना और टीवी में देखे लंबे बालोंवाला राष्ट्रपति कलाम सा बनना । एक अलग जीवन, बेहतर जीवन का सपना दिखाने से कलाम को स्कूल जाना बहुत पसंद था । वह सबकुछ जल्दी से सीखनेवाला था तथा जीवन की कठिनाइयों को हराकर बडे आदमी बनने की आशा रखनेवाला एक ईमानदार लडका भी । घुडसवारी सीखने और पेड पर चढना सिखाने के लेन देन को लेकर रणविजय के साथ उसकी दोस्ती हो जाती है । अंग्रेज़ी सीखने में रणविजय उसकी मदद करता है तो कलाम रणविजय को हिंदी । स्कूल के हिंदी भाषण प्रतियोगिता केलिए भाषण तैयार करने में कलाम रणविजय की सहायता भी करता है । दोस्ती को ऊँचा स्थान देने से अपने ऊपर चोरी का आरोप लगाने पर अपने मित्र को बचाने केलिए वह उस आरोप को सह लेता है । राष्ट्रपति कलाम जी से मिलने वह गाँव छोडकर दिल्ली तो पहुँचता है पर उनसे मिल न सकता । अंत में अपने दोस्त के साथ स्कूल जाकर पढने में वह सफल बनता है ।

14. टिप्पणी – कलाम और रणविजय के जीवन के अंतरों पर

कलाम गरीब घर का लडका था । पर उसका मित्र रणविजय तो राज परिवार का यानी ढाणा के राणा का बेटा था । कलाम केलिए स्कूल जाना सबसे बडा सपना था, पर रणविजय स्कूल जाना कतई पसंद नहीं करता था । कलाम चाय की दुकान में काम करता था । रणविजय तो अंग्रेज़ी स्कूल का छात्र था । रणविजय गुड सवारी जानता था तो कलाम पेड पर चढना जानता था । कलाम को अच्छी तरह हिंदी आती थी तो रणविजय को अंग्रेज़ी । कलाम को पहनने केलिए अच्छे कपडे तथा पढने केलिए पुस्तकें नहीं थे तो रणविजय के पास पहनने केलिए महंगे कपडे तथा पढने केलिए अनेक पुस्तकें थे । रणविजय सुख-सुविधाओं पर रहते समय कलाम अभावों में जीवन बिता रहा था । कलाम सीखने में तेज़ हो तो रणविजय कुछ आसली था ।

भाग – दो (भाटीसा की दुकान जुडे कार्य)

1. छोटू कहाँ काम करता है ?

भाटीसा की चाय की दुकान में

2. कलाम को चाय की दुकान में क्यों काम करना पडा ?

वह गरीब परिवार का था ।

3. फिल्म के नायक कलाम को छोटू नाम से क्यों बुलाते हैं ?

क्योंकि ढाणी पर काम करनेवाले बच्चों को ऐसे बुलाते थे ।

4. छोटू उर्फ कलाम का सपना क्या था ?

स्कूल जाना और टीवी में देखे लंबे बालों वाले राष्ट्रपति कलाम जैसा बनना ।

5. छोटू की आकांक्षाएँ क्या-क्या हैं ?

स्कूल की अच्छी शिक्षा पाकर डॉ. कलाम जैसा बडा आदमी बनना

6. छोटू खुद ही अपना नाम कलाम रख लेता है । क्यों ?

ढाणी के लोग उसे छोटू कहकर बुलाता था, जो वह पसंद नहीं करता था । उसका सपना था– स्कूल जाना और टीवी में देखे लंबे बालोंवाले राष्ट्रपति कलाम जैसा बनना । पढ-लिखकर कलाम जी जैसे बडे आदमी बनने के मोह से वह खुद अपना नाम कलाम रख लेता है । इस नामकरण में हम उसकी आकांक्षाओं का अक्स देख सकते हैं ।

7. छोटू सिर्फ़ छोटू होकर नहीं जीना चाहता । - इसका मतलब क्या है ?

वह कलाम जैसा बनना चाहता है ।

8.' लेकिन छोटू सिर्फ छोटू होकर नहीं जीना चाहता ।'- इससे आपने क्या समझा ?

चाय की दूकान में काम करनेवाला होने पर भी छोटू की आकांक्षाएँ बडी हैं । टीवी में देखे राष्ट्रपति कलाम जी का भाषण सुनकर, उनसे प्रभावित होकर वह अपना नाम कलाम रख देता है । स्कूल की अच्छी शिक्षा पाकर डॉ. कलाम जैसा बडा आदमी बनना उसका सपना है ।

9.' लेकिन छोटू सिर्फ छोटू होकर नहीं जीना चाहता ।'- तो वह कैसे जीना चाहता है ?

वह राष्ट्रपति कलाम जी का भाषण से प्रभावित होकर कलाम बनना चाहता है । इसलिए वह छोटू नाम के बदले अपना नाम कलाम रखता है ।

10. कलाम सीखने में तेज़ है । समर्थन करें ।

कलाम ढाणी पर आते विदेशी टूरिस्ट की बोली झट से सीख लेता है । साथ-साथ रणविजय से अंग्रेज़ी भी सीख लेता है ।

11. ' चाय में जादू है ' इसका मतलब क्या है ?

बढिया चाय है ।

12. भाटीसा छोटू की किस कलाकारी की प्रशंसा करते हैं ?

वह बढिया चाय बनाता है ।

13. भाटीसा छोटू की प्रशंसा क्यों करता है ?

छोटू बढिया चाय बनाता है ।

14. भाटी सा छोटू की कलाकारी की वहवाही करते नहीं थकते । क्यों ?

क्योंकि छोटू हर काम अच्छी तरह से करता है । उसके हाथ से बनाई चाय में जादू है । वह जल्दी ही भाषाएँ सीख लेता है ।

15. लूसी मैडम कलाम को क्या वादा देती है ?

वे उसे अपने साथ दिल्ली लेकर जाएँगी और राष्ट्रपति डॉ. कलाम जी से मिलवाएँगी ।

16. छोटू लूसी मैडम का दिल कैसे जीत लेता है ?

विदेशी टूरिस्ट की बोली झट-से सीख जाता है । इस प्रकार वह लूसी मैडम का दिल जीत लेता है ।

17. छोटू की डायरी (टीवी में राष्ट्रपति कलाम को देखने के बाद)

तारीख : ……………….

आज मेरे मन में एक विचार आया । वह मैं कभी साकार करूँगा । मुझे सब छोटू बुलाते हैं । आज से मेरा नाम कलाम है । टीवी में हमारे राष्ट्रपति डॉ.कलाम का भाषण मैंने देखा । कितना प्रभावकारी शब्द है उनका । भविष्य में मैं भी डॉ.कलाम जैसा बनूँगा । उनके नाम आज ही एक पत्र लिखूँगा । फिर उनसे मिलूँगा । इसकेलिए पढना ज़रूरी है । मैं कठिन परिश्रम करूँगा और सफल हो जाऊँगा ।

18. कलाम की डायरी (माँ छोटू को भाटीसा की चाय की दुकान में नौकरी केलिए छोड देती है ।)

तारीख : ……………….

आज मैं अपनी माँ के साथ गाँव से भाटी सा की चाय की थडी में आया । मुझे यहाँ काम करने केलिए छोडके मेरी माँ गाँव चली गई । मेरे घर की गरीबी ने मुझे यहाँ पहुँचाया । आगे मुझे यहाँ रहना पडेगा । कोई परवाह नहीं । मुझे एक बडी इच्छा है । राष्ट्रपति कलाम के समान बनना । मैं इस चाय की थडी से पैसा कमाकर अपने लक्ष्य तक पहुँचूँगा । ईमानदारी से काम करके सबकी प्रशंसा का पात्र बनना है । लेकिन सबसे पहले पढाई होनी चाहिए । अन्य बच्चों की तरह स्कूल जाकर पढाई करने का अवसर मुझे कब मिलेगा । यदि भाटी सा मेरी सहायता करेंगे तो मैं किसी न किसी तरह छोडा-थोडा पढना भी चाहता हूँ । जो भी हो मैं अपना प्रयास ज़ारी रखूँगा । छुट्टी मिलने पर माँ से फिर मिलूँगा । मेरे जीवन का यह अविस्मरणीय दिन मैं कभी नहीं भूलूँगा ।

19. पटकथा (माँ छोटू को भाटीसा की चाय की दुकान में नौकरी केलिए छोड देती है ।)

स्थान - भाटीसा की चाय की थडी ।
समय - सबेरे 10 बजे ।
पात्र - माँ, छोटू और भाटीसा ।
दृश्य का विवरण - माँ छोटू को भाटीसा की चाय की दुकान पर काम करने के लिए ले आती है ।

संवाद -

माँ - जी आप इस थडी के मालिक हैं ?
भाटी सा - हाँ । बताइए माँ, मैं आपकी क्या सहायता करूँ ?
माँ - यह मेरा बेटा है, इसे आपकी दुकान में काम पर रखने की कृपा कीजिए ।
भाटी सा - आप कहाँ से रही हैं ?
माँ - मैं जैसलमेर के पासवाले एक गाँव से आती हूँ । मैं अपनी गरीबी से इस बच्चे को बचाना चाहती हूँ । आप मेरी मदद कीजिए ।
भाटी सा - ठीक है । मैं इसे कितने रुपए दे दूँ ? छोटा लडका है ।
माँ - आप कुछ भी दीजिए, इसे अपने पास रखने की कृपा करें ।
भाटी सा - ज़रूर । एक महीना देख लेता हूँ । ठीक है तो अपने पास ही रख लूँगा ।
माँ - बडी मदद होगी साहब ।
भाटी सा - अंदर आओ बेटा, अपने सामान रख लो । क्या आपका बेटा जल्दी यहाँ के सारे काम सीख लेगा ?
माँ -ज़रूर साहब, मेरा बेटा सीखने में तेज़ है । वह जल्दी ही सब सीख लेगा ।
भाटी सा - तो ठीक है माँ, आप जाइए । मैं इसे देख लूँगा ।
माँ - धन्यवाद साहब ।
भाटी सा - धन्यवाद माँ ।

(माँ छोटू को भाटीसा की दुकान पर काम करने केलिए छोडकर वापस अपना गाँव की ओर निकलती है ।

20. वार्तालाप – छोटू भाटी सा को चाय बनाकर देने पर

कलाम - प्रणाम भाटी मामा ।
भाटी सा - खुश रहो बेटा ।
कलाम - आप चाय पीजिए ।
भाटी सा - चाय … तुमने बनाई ?
कलाम - हाँ जी ।
भाटी सा - अरे वाह !
कलाम - कैसे हैं भाटी मामा ?
भाटी सा - इस चाय में जादू है ।
कलाम - आपको पसंद आई ?
भाटी सा - बिलकुल, पहली बार ऐसी चाय पीता हूँ ।
कलाम - सही ?
भाटी सा - यह तो कलाकारी है । इसलिए आजकल ज़्यादा विदेशी लोग इसी दुकान में आते हैं । ज़रूर ऐसा ही होगा ।
कलाम - धन्यवाद भाटी मामा ।

21. कलाम की डायरी – लूसी मैडम उसे दिल्ली ले जाने का वादा करती हैं ।

तारीख : ……………….

कैसे भूलूँ आज का दिन ? आज लूसी मैडम आई थीं … इधर चाय की दुकान में । मैंने बढिया चाय बनाकर दी । मुझसे बहुत बातें कीं । मेरी चाय उन्हें भी पसंद है । भाटीसा के समान वे भी बहुत तारीफ करती हैं । विदेशी हैं, फिर भी अपनापन का अनुभव होता है । उनसे कुछ अंग्रेज़ी शब्द सीख लिया है । उनसे बातें करने में कितना मज़ा आता है । आज उन्होंने वादा की … " मुझे दिल्ली लेकर जाएँगी " " मुझे पढाएँगी " बहुत खुश हूँ मैं … बहुत खुश हूँ ।

22. वार्तालाप – कलाम और लूसी मैडम के बीच का (दिल्ली जाने की कलाम की इच्छा के बारे में)

कलाम - मैडम नमस्ते । क्या चाहिए ?

लूसी मैडम - नमस्ते कलाम । मुझे बस एक चाय चाहिए ।

कलाम - ठीक है, मैं अभी लाता हूँ ।

लूसी मैडम – भाटीसा कहाँ गया ?

कलाम - बाज़ार गया है ।

लूसी मैडम – (चाय पीकर) तुम्हारी चाय तो कमाल की है बेटा ।

कलाम - जी, आपकी तारीफ केलिए धन्यवाद । आप कब दिल्ली जाएँगी ?

लूसी मैडम – अगले हफ्ते । क्या है बेटा, बताइए ?

कलाम - जी, मैं दिल्ली जाकर राष्ट्रपति कलाम जी से मिलना चाहता हूँ । क्या मैं भी आपके साथ आऊँ ?

लूसी मैडम – ऐसा हो तो भाटीसा से कहकर तुम भी आओ मेरे साथ । मैं ज़रूर तुम्हें उनसे मिलवाऊँगी ।

कलाम - ठीक है मैडम । भाटीसा से छुट्टी माँगकर मैं ज़रूर आपके साथ आऊँगा ।

लूसी मैडम – ठीक है बेटा । तुम जाने की तैयारियाँ करो, अगले हफ्ते हम एकसाथ यहाँ से निकलेंगे । यही है चाय का पैसा । दिल्ली जाने के दिन मैं तुम्हें बुलाऊँगी । बाई ।

कलाम - आपकी इस मदद केलिए बहुत बहुत शुक्रिया मैडम । बाई ।

23. पोस्टर (points) संदेश – बालश्रम के विरुद्ध

1. बालश्रम दुनिया की एक भीषण समस्या है…
   बच्चों को काम केलिए नहीं,स्कूल में भेज दें ।
2. बालश्रम रोको…
   बच्चों को पढने,खेलने और बढने दें ।
3. बालश्रम कानूनी अपराध है…
   बालश्रम करानेवालों को कठिन दंड दें ।
4. आज के बच्चे कल के नागरिक हैं…
   मिटाओ जड से बालश्रम,बचाइए भविष्य अपने देश की ।
5. जिस देश के बच्चों का कोई भविष्य नहीं…
   उस देश की अपनी कोई भविष्य नहीं ।
6. बालश्रम एक अभिशाप है…
   एकसाथ हम इस सामाजिक समस्या का उन्मूलन करें ।

विश्व बालश्रम विरुद्ध दिवस – जून 12

4. आई एम कलाम के बहाने PART - 4 (एक दिन रणविजय को उसके स्कूल में भाषण देने ----------- मंज़िल मिलती है ।)

1. मुहावरे का मतलब क्या है ?

1. परेशान होना – दुखी बनना 2. तलाशी लेना – अन्वेषण करना 3. आरोप लगाना – इल्ज़ाम लगाना/ दोष लगाना
4. तय करना – निश्चय करना 5. प्रण तोडना – प्रतिज्ञा का लंघन करना 6. मंज़िल मिलना - लक्ष्य प्राप्त करना

2. हम – से जुडे शब्द और अर्थ

1. हमनाम – समान नामवाला	2. हमउम्र – समान उम्रवाला	3. हमअसर – समान असरवाला	4. हमख्याल – समान मतवाला
5. हमजोली – समान ओहदेवाला	6. हमजिंस – समान जाति का	7. हमपेशा – समान काम करनेवाला	8. हम मज़हब – समान धर्म का
9. हम वतन – समान देश का	10. हम शक्ल – समान आकार का		

भाग – एक (रणविजय को स्कूल में भाषण प्रतियोगिता)

1. भाषण देने में रणविजय की परेशानी क्या है ?
   उसकी हिंदी इतनी अच्छी नहीं थी ।
2. रणविजय बहुत परेशान हुआ । क्यों ?
   एक दिन रणविजय को उसके स्कूल में भाषण देने केलिए कहा जाता है । लेकिन उसकी हिंदी इतनी अच्छी नहीं थी । इस कारण रणविजय बहुत परेशान हुआ ।
3. रणविजय हिंदी भाषण में प्रथम पुरस्कार पाता है । कैसे ?
   कलाम द्वारा लिखित भाषण स्कूल में प्रस्तुत करने से
4. कलाम रणविजय को क्या लिखकर देता है ? क्यों ?
   एक दिन रणविजय को उसके स्कूल में भाषण देने केलिए कहा जाता है । उसकी हिंदी अच्छी न होने से कलाम उसे झट से एक अच्छा-सा भाषण लिखकर देता है ।

5. रपट तैयार करें (स्कूल के भाषण प्रतियोगिता में रणविजय को प्रथम स्थान मिला)

भाषण प्रतियोगिता ; रणविजय को प्रथम स्थान

स्थान : ------------ कल जैसलमेर के सरकारी हाईस्कूल में भाषण प्रतियोगिता चलाई गई । इसमें ढाणा के राणा का बेटा कुँवर रणविजय को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ । पुरस्कार प्राप्ति के बाद उसने कहा कि अपने दोस्त कलाम ने यह भाषण तैयार किया था । इसलिए पुरस्कार उसकेलिए है । कुँवर की हिन्दी अच्छी न होने से कलाम उसकी मदद की थी । यह पुरस्कार प्राप्ति रणविजय और कलाम के बीच की दोस्ती की अनूठी निशानी भी है । पुरस्कार वितरण स्कूल के प्रधानाध्यापिका ने किया। ढाणी में कुँवर के विजय पर खुशी मनाई गई ।

6. वार्तालाप (स्कूल में भाषण प्रतियोगिता)

कलाम - अरे कुँवर, तुम क्यों उदासीन हो ?
रणविजय - कुछ नहीं छोटू ।
कलाम - क्या बात है ? जो भी हो, हल हो जाएगा ।
रणविजय - मुझसे कल स्कूल में हिंदी में भाषण देने केलिए कहा है ।
कलाम - वह अच्छी बात है न ?
रणविजय - बात यह है छोटू ... मुझे हिंदी अच्छी तरह मालूम नहीं है ।
कलाम - यही बात है न ... ? मैं तुम्हारी मदद करूँगा ।
रणविजय - कैसे ?
कलाम - मैं लिख दूँगा, तुम प्रस्तुत करो ।
रणविजय - ज़रूर । बहुत बहुत धन्यवाद छोटू ।
कलाम - तुम मेरा मित्र हो न ... मुझसे धन्यवाद कहने की कोई आवश्यकता नहीं ।
रणविजय - ठीक है यार ।

7. रणविजय की डायरी (भाषण जीतकर आने पर कलाम चोरी के आरोप पर गाँव छोडकर दिल्ली जाता है)

तारीख : ……………….

आज कलाम की मदद से मुझे भाषण में प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार मिला । सभी लोगों ने मेरी तारीफ की । लेकिन मेरे मन में उसका चेहरा था । मुझे मालूम है मेरी हिंदी इतनी अच्छी नहीं थी । इस भाषण के बारे में बताते वक्त उसने झट से एक अच्छा-सा भाषण लिखकर दिया था । वह भाषण कितना आकर्षक था । दूसरों की खुशी चाहनेवाला उसका मन कितना बडा है ! पर क्या करूँ ? ट्रॉफी लेकर उसे दिखाने आया तो पता चला कि वह चोरी के आरोप में गाँव छोडकर दिल्ली गया है । मैं दुख सह न पाया । सच में मुझे बचाने केलिए उसने वह चोरी का आरोप सह लिया था । दोस्ती को इतना ऊँचा स्थान देनेवाले मित्र को मैं कैसे खोऊँ ? मेरे पापा से सच बताने पर उन्होंने कलाम को ढूँढकर लाने की अनुमति दे दी । कल मैं उसकी तलाश में दिल्ली जाऊँगा । वापस आकर उसे भी मेरे स्कूल में भर्ती कराना है । ऐसे हम एक साथ स्कूल बस में स्कूल जाएँगे । वह कितना खुश होगा ! उसकी मंज़िल की पूर्ति करना अब मेरा ही दायित्व है ।

8. कलाम के नाम रणविजय का पत्र (भाषण प्रतियोगिता जीतने पर कलाम की मदद के बारे में) स्थान : ……………….

तारीख : ……………….

प्रिय मित्र,

तुम कैसे हो ? कुशल हो न ? मैं यहाँ ठीक हूँ । तुम्हारी कोई खबर नहीं कुछ दिनों से,एक खास बात बताने केलिए मैं अब यह पत्र भेज रहा हूँ ।

तुम्हारी मदद से आज मुझे भाषण प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार मिला। सभी लोगों ने मेरी तारीफ की। लेकिन मेरे मन में तुम्हारा चेहरा था। मुझे मालूम है मेरी हिंदी इतनी अच्छी नहीं थी। इस भाषण के बारे में बताते वक्त तुमने झट से एक अच्छा-सा भाषण लिखकर दिया था। वह भाषण कितना आकर्षक था। दूसरों की खुशी चाहनेवाला तेरा मन कितना बडा है कलाम। मैं तुम्हारा आभारी हूँ । एक दिन तुमसे मिलने आऊँगा।

वहाँ तुम्हारी पढाई कैसे हो रही है ? तुम कब यहाँ आओगे ? परिवारवालों से मेरा प्रणाम कहना । जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

सेवा में, तुम्हारा मित्र
नाम (हस्ताक्षर)
पता । नाम

भाग – दो (छोटू पर चोरी का आरोप)

1. राणा सा के कारिंदे कलाम पर चोरी का आरोप क्यों लगाते हैं ?
   वे कलाम के घर की तलाशी लेने आते समय वहाँ कुँवर रणविजय की चीज़ों को पाने से।
2. छोटू ने रणविजय की दोस्ती के बारे में राणा-सा के कारिंदे से नहीं बताया । क्यों ?
   छोटू और रणविजय की दोस्ती के कारण रणविजय को दंड मिलेगा । इसी डर से छोटू ने उनकी दोस्ती के बारे में राणा के कारिंदे से नहीं बताया । यह भी नहीं कि छोटू, रणविजय की दोस्ती छूटना नहीं चाहता ।
3. छोटू ने चोरी का आरोप सहन किया । क्यों ?
   दोस्ती का प्रण न तोडने केलिए और रणविजय को राणा से उससे की दोस्ती की सज़ा मिलने से बचाने केलिए वह चोरी का आरोप सहन करता है ।
4. राणा रणविजय को किसकी सज़ा देंगे ?
   कलाम के साथ की गई दोस्ती की
5. ‘ लेकिन कलाम फिर कलाम है ’- लेखक के इस प्रस्ताव पर अपना विचार लिखें ।
   राणा सा के कारिंदे कलाम पर चोरी का आरोप लगाने पर भी मित्र रणविजय से की दोस्ती का प्रण न तोडने केलिए वह उसको सह लेता है । रणविजय को राणा से उससे की दोस्ती की सज़ा मिलने से बचाने केलिए वह ऐसा करता है । अभावों में रहने पर भी कलाम दोस्ती को ऊँचा स्थान देनेवाला होने से लेखक ऐसा कहते हैं ।

6. कलाम की डायरी (राणा के कारिंदे ने उसपर चोरी के आरोप लगाने से वह दुखी होकर)

तारीख : ………….

आज मेरेलिए दुखी दिन था । आज ढाणी के राणा के कारिंदे मेरे घर में आए । यहाँ तलाशी लेने पर उनको कुँवर रणविजय की चीज़ें मिली । ये चीज़ें मेरेलिए रणविजय ने ही दी थी । लेकिन राणा के कारिंदे ने मुझपर चोरी का आरोप लगाया । मुझे उनसे सज़ा मिली । मैंने नहीं बताया कि ये चीज़ें रणविजय ने मुझे दी हैं । यह बताएँ तो रणविजय को मेरी दोस्ती के नाम पर दंड मिलेगा । इसलिए मैं चुपके से दंड स्वीकार किया । मैं कुँवर रणविजय की दोस्ती छूटना नहीं चाहता हूँ । आज का दिन मैं कभी नहीं भूलूँगा ।

7. रपट (चोरी का आरोप लगने पर छोटू चाय की थडी छोडकर भाग जाता है ।)

चोरी का आरोप : बालक लापता

स्थान : .... चोरी के आरोप से दुखी बालक छोटू कल से जैसलमेर से लापता हो गया है । छोटू कुछ महीनों से भाटी सा की चाय की थडी में काम कर रहा था । इसके बीच ढाणी के राणा के बेटे से उसकी दोस्ती हो गयी । उसने छोटू को बहुत सारी चीज़ें भेंट स्वरूप दी थी । ये देखकर राणा सा के आदमी गलती से उसे चोर समझा था । रणविजय से असलियत जानने पर राणा और उसके आदमी छोटू की खोज में हैं ।

8. कलाम का पत्र (दोस्ती को बनाए रखने में अपनी परेशानी, चोरी का आरोप)

स्थान : ....

तारीख : ....

प्रिय मित्र,

तुम कैसे हो ? कुशल हो न ? मैं यहाँ ठीक हूँ । तुम्हारी कोई खबर नहीं कुछ दिनों से, एक खास बात बताने केलिए मैं अब यह पत्र भेज रही हूँ ।

यहाँ पर मेरा एक मित्र है जिसका नाम है रणविजय। वह राणा सा का पुत्र है। कुछ दिनों के पहले के राणा सा के कारिंदे मेरे घर की तलाशी लेने आये थे। कुँवर रणविजय की कुछ चीज़े मेरे घर से मिलीं और इससे मेरे ऊपर चोरी का आरोप लगाया गया। पर मैंने इस आरोप के सामने अपनी दोस्ती का प्रण नहीं तोडा। मैं चोरी का आरोप सह लेता था, पर रणविजय से हुई दोस्ती के बारे में नहीं बताया। इस प्रकार बहुत परेशानियाँ का अनुभव महसूस करते हुए पिछले हफ्ता चला गया।

पता नहीं, कब मुझे अपने पसंदीता स्कूल जाकर पढने का अवसर मिलेगा ? मुझे मिलने तुम कब यहाँ आओगे ? जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

सेवा में, तुम्हारा मित्र
नाम (हस्ताक्षर)
पता । नाम

भाग – तीन (छोटू की सफलता)

1. छोटू गाँव छोडकर क्यों जाता है ?
   क्योंकि उसके ऊपर चोरी का आरोप लगाया जाता है ।
2. यहाँ ‘ झूठा आरोप ’ क्या है ?
   कलाम ने रणविजय की चीज़ों को चुरा लिया है ।
3. ‘ छोटू को अपनी मंज़िल मिलती है ।’ उसकी मंज़िल क्या थी ?
   स्कूल जाना और टीवी में देखे लंबे बालों वाले राष्ट्रपति कलाम जैसा बनना ।
4. फिल्म के अंत में कलाम क्या तय करता है ?
   वह अपनी चिट्ठी सीधे अपने हमनाम डॉ. कलाम को दिल्ली जाकर खुद देगा ।
5. कलाम दिल्ली में जाना क्यों चाहता है ?
   अपनी चिट्ठी सीधे अपने हमनाम डॉ. कलाम को खुद देने ।

6. कलाम का पत्र (अपनी सफलता के बारे में)

स्थान : ....

तारीख : ....

प्रिय मित्र,

तुम कैसे हो ? कुशल हो न ? मैं यहाँ कुशलता से हूँ । परीक्षा की तैयारी में होंगे ? एक खुशी की बात बताने केलिए यह पत्र लिखता हूँ ।

आज मेरेलिए अविस्मरणीय दिन है । वर्षों से होनेवाला मेरा सपना आज सफल हुआ । मेरी इच्छा थी कि दिल्ली जाकर कलाम जी से मिलना । विदेशी टूरिस्ट लूसी मैडम ने मुझसे कहा था कि वे मुझे दिल्ली ले जाएँगी । कलाम जी से मिलने का अवसर भी देगी । उस समय तक इंतज़ार करने की क्षमा मुझे नहीं थी । इसलिए मैं अकेला दिल्ली गया । रास्ते में बहुत मुश्किलें हुईं । कलाम जी के नाम पर लिखी चिट्ठी मेरी जेब में थी । वह कलाम जी के हाथ में दी । कलाम जी के साथ खडे होकर एक फोटो भी लिया । यह अनुभव वर्णनातीत है । अब मैं दिल्ली में हूँ ।

तुम्हारी माताजी और पिताजी को मेरा प्रणाम । छोटे भाई को मेरा प्यार । तुम्हारी जवाब की प्रतीक्षा में,

सेवा में, तुम्हारा मित्र
नाम (हस्ताक्षर)
पता । नाम

7. कलाम की डायरी (फिल्म के अंत में कलाम का सपना साकार हो जाता है ।)

तारीख: ....

आज अपनी पसंद के स्कूल में मेरा पहला दिन। मेरा सपना साकार हो गया। स्कूल बस में मित्र रणविजय के साथ स्कूल गया। स्कूल यूनीफॉर्म पर टाई बाँधकर हम दोनों साथ –साथ चले। क्लास में उसके साथ बैठकर पढा। स्कूल की बात माँ से कहने पर वे भी खुश हुई। याद आया, चाय की दूकान में काम करते समय लफ्टन से रूठता था। लूसी मैडम ने मुझे दिल्ली ले जाकर कलाम जी से मिलवाने का वादा दिया था। चोरी के आरोप पर गाँव छोडकर दिल्ली पहुँचा था। लेकिन कलाम जी से मिल न सका। पर मेरी चिट्ठी कलाम जी तक जरूर पहुँचेगी । सब सपने जैसे लग रहे हैं आज ! भाटीसा आजकल बहुत खुश दिखते हैं। अपनी पढाई का खर्चा मैं खुद उठाऊँगा। अच्छी तरह पढ-लिखकर मैं कलाम जी जैसा बडा आदमी बनूँगा।

8. छोटू उर्फ कलाम ने राष्ट्रपति डॉ.कलाम को देने लिखा पत्र

जैसलमेर
06 जून 2019

आदरणीय राष्ट्रपति साहब,

नमस्कार । आप कैसे हैं ? आशा है आप वहाँ कुशल से हैं । मैं आपसे अपनी मंज़िल बताना चाहता हूँ । मैंने अपनी चिट्ठी में थोडी लिखी है, पर बहुत समझना । चिट्ठी को तार समझकर जल्दी जवाब देना ।

मैं ढाणी के एक थडी में काम करनेवाला एक बच्चा हूँ , जिसकी जिंदगी आपने बदल दी । मेरा नाम छोटू है ,लेकिन मैं अपने को कलाम मानता हूँ । मुझे छोटू अच्छा नहीं लगता । टीवी में आपका भाषण सुना । कितना अच्छा था । मैं समझता हूँ कि हर बच्चा लाल बहादुर शास्त्री बन सकता है और राष्ट्रपति कलाम भी बन सकता है । मैं आप जैसे बनना चाहता हूँ । लेकिन मैं बडा गरीब हूँ । मुझे स्कूल जाने की इच्छा है, मेरे मित्र रणविजय के साथ । लूसी मैडम ने आपसे मिलवाने का वादा किया था ।

मुझे आपसे बहुत-सी बातें करनी हैं । मालूम है आपको बच्चे बहुत पसंद हैं । पढ-लिखकर मुझे आपके जैसा होना है । इसलिए कृपया आप मेरी मदद कीजिए । बस इतना ही कहना है और हाँ ... धन्यवाद भी बोलना है ।

आपका आज्ञाकारी छात्र
कलाम (छोटू)

सेवा में
डॉ. अब्दुल कलाम
राष्ट्रपति
दिल्ली

9. समाचार (रपट) – ' आई एम कलाम ' नामक फिल्म में छोटू का सपना साकार होने के बारे में

गरीब बालक का सपना पूरा हुआ

स्थान : ....चाय की दुकान में काम करनेवाला एक गरीब बालक का सपना पूरा हुआ । छोटू उर्फ़ कलाम का सपना था - स्कूल जाना और टीवी में देखे लंबे बालोंवाले राष्ट्रपति कलाम-सा बनना । स्कूल में पढाई करने के लिए उसको बडा शौक था । चाय की दूकान में काम करते समय विदेशी टूरिस्ट लूसी मैडम से परिचय हुआ, उन्होंने छोटू को दिल्ली ले जाने का वादा किया था । लेकिन छोटू अकेला ही दिल्ली गया । रास्ते में बहुत मुश्किलें हुईं। अंत में कलाम जी से मिला। कलाम जी ने छोटू की पढाई के लिए सहायता करने का वादा किया। छोटू कलाम जी से बहुत आभारी है ।

10. पोस्टर – फिल्म का प्रदर्शन

प्रगति फिल्म क्लब, चेन्नै
वार्षिक समारोह

2020 मार्च 18, बुधवार को
सुबह 10 बजे सिनी हॉल, चेन्नै

उद्घाटन – जिलाधीश
अध्यक्ष – क्लब प्रसिडेंट

* विविध प्रधियोगिताएँ
* सार्वजनिक सम्मेलन
* पुरस्कार वितरण

फिल्म का प्रदर्शन -

आई एम कलाम

प्रदर्शन दोपहर साढे 2 बजे से - 4 बजे तक

भाग लें ... लाभ उठाएँ ...
सबका स्वागत